RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-03
Issue-06
June -2018

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

कड़ाना बांध परियोजना और राजस्थान के बांसवाड़ा और डूंगरपुर जिलों की जनजातियों का उत्थान

Bhuri Lal Meena

Lecturer, Geography, Government College Sarada, Udaipur (Rajasthan)

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 19 June 2018

Keywords
कड़ाना बांध, रोजगार, पर्यटन, जीवन-उत्थान, जीवन स्तर

ABSTRACT

विभिन्न कारकों के अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि उत्तरदाताओं के जीवन स्तर का निवास क्षेत्र से कोई सम्बन्ध नहीं है। अर्थात कड़ाना बांध योजना से राजस्थान के जनजातीय आबादी के जीवन स्तर में कोई बदलाव नहीं आया। इसी समान डूंगरपुर ओर बाँसवाड़ा के लोगों कड़ाना बांध परियोजना से परंपरागत रोजगार से इतर कोई नवीन अवसर प्राप्त नहीं हुए। इसके विपरीत इस परियोजना से क्षेत्र में प्रवास को बढ़ावा है क्योंकि कृषि की सम्भावनाएं कम हो गई है। इस परियोजना से पर्यटन आकर्षित करने में भी कोई सफलता मिली है। हालांकि कड़ाना परियोजना से अध्ययन क्षेत्र में आधारभूत सुविधाएं बढ़ी है।

परिचय –

कडाना सिंचाई परियोजना का आम जनजीवन का प्रभाव बांसवाड़ा, डूंगरपुर (राजस्थान), पंचमहल, साबरकांटा, खेड़ा (गुजरात) में देखने को अधिक मिला है मुख्यतः यह प्रभाव शिक्षा, चिकित्सा, आय, रहन-सहन, आर्थिक स्थिति, संचार एवं परिवहन के क्षेत्रों में विशेषतः देखने को मिला है। कडाना परियोजना से प्रत्यक्ष रूप से लुनावाड़ा एवं कडाना तहसीलों पर प्रभाव अत्यधिक पड़ा है। बांसवाड़ा एवं डूंगरपुर तहसीलों में निवासरत जनजातीय परिवारों पर इस बांध परियोजना को प्रत्यक्ष रूप से कोई फायदा नहीं मिला है क्योंकि इस परियोजना के कमाण्ड क्षेत्र में अत्यधिक विस्तार हो जाने के कारण उनका जनजीवन अस्त-व्यस्त हो गया है क्योंकि यहां के निवासियों का एकमात्र आय का जरीया जो कि खेती था वहीं वे लोग नहीं कर पा रहे हैं। उन्हें मजदूरी हेतु अन्यत्र पलायन कर अपने परिवार से दूर रहने पर विवश होना पड़ रहा है। जिससे उनके स्वास्थ्य, शिक्षा, जनजीवन पर असर पड़ रहा है।

आर्थिक रूप से कडाना बांध परियोजना से लाभान्वित जिलों में पंचमहल, सांरकाटा व खेड़ा जिले आगे है। खाद्यान्न उत्पादन, पशुपालन, मत्स्य पालन, रोजगार के क्षेत्र में, सड़क, चिकित्सा, शिक्षा आदि में भी आगे है। बांसवाड़ा व डूंगरपुर जिलों में इस बांध का प्रभाव नहीं पड़ता है।

अध्ययन क्षेत्र एवं आंकड़ों का संकलन –

प्रस्तुत शोध में माही नदी पर बनाए गए कड़ाना बांध परियोजना का जनजीवन पर प्रभाव का अध्ययन किया गया हैं। यह बांध गुजरात राज्य के पंचमहल जिले में स्थित हैं। इस शोध हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकड़ों के साथ व्यक्तिगत साक्षात्कार एवं अनुसूची का उपयोग किया गया हैं। इस अध्ययन के लिए देश एवं प्रदेश के विभिन्न विभागों की रिपोर्ट्स का इस्तेमाल भी किया गया हैं।

कड़ाना बांध परियोजना से जीवन स्तर में सुधार हुआ है।

यहाँ यह परिकल्पित किया गया है कि कड़ाना बांध परियोजना से उत्तरदाताओं के जीवन स्तर में सुधार हुआ है क्योंकि सामान्यतया सिंचाई परियोजनाओं के विकास से लोगों की आय में वृद्धि होती है। उत्तरदाताओं के उत्तरों को सारणी 1 में प्रदर्शित किया गया है।

सारणी 1: कड़ाना बांध परियोजना से जीवन स्तर में सुधार

क्र. सं.	क्षेत्र	सहमत	असहमत	अनमभिज्ञ	कुल योग
1.	आनन्दपुरी	48	4	8	60
2.	गढ़ी	28	24	8	60
3.	सागवाड़ा	56	0	4	60
योग		**132**	**28**	**20**	**180**

(स्रोत - क्षेत्रीय सर्वेक्षण)

सारणी 1 से स्पष्ट है कि कुल 180 उत्तरदाताओं में से 132 उत्तरदाता इस कथन पर असहमत थे वही 28 उत्तरदाता इस कथन से सहमत थे वही 20 उत्तरदाताओं में इस सन्दर्भ में अनभिज्ञता जाहिर की। आनन्दपुरी के 48 व सागवाड़ा व गढ़ी के क्रमशः 28 व 56 उत्तरदाता इस कथन से असहमत है।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

काई वर्ग परीक्षण हेतु यह मान्यता ली गई है कि उत्तरदाताओं के जीवन स्तर का उनके निवास क्षेत्र से कोई सम्बन्ध नहीं है। काई वर्ग परीक्षण से पता चला कि 4 मूल्य 0.6581 से बहुत अधिक है अतः हमारी शुन्य परिकल्पना सत्य सिद्ध होती है एवं यह निष्कर्ष निकलता है कि उत्तरदाताओं के जीवन स्तर का निवास क्षेत्र से कोई सम्बन्ध नहीं है।

कड़ाना बांध परियोजना से जनजातिय क्षेत्र में रोजगार के अवसर बढ़े

यहां यह परिकल्पित किया गया है कि कड़ाना बांध परियोजना से जनजाति उपयोजना क्षेत्र में रोजगार के अवसर बढे है। उत्तरदाताओं के प्रतिउत्तरों को निम्न सारणी 2 में सूत्रबद्ध किया गया है।

सारणी 2 : कड़ाना परियोजना से जनजातिय क्षेत्र में रोजगार अवसर बढ़े

क्र. सं.	क्षेत्र	सहमत	असहमत	अनमभिज्ञ	कुल योग
1.	आनन्दपुरी	35	20	5	60
2.	गढ़ी	25	27	8	60
3.	सागवाड़ा	5	38	17	60
योग		**64**	**85**	**30**	**180**

(स्रोत - क्षेत्रीय सर्वेक्षण)

सारणी 6.15 से स्पष्ट है कि 65 उत्तरदाता इससे सहमत थे वही 85 उत्तरदाता इस मत से असहमत थे वही 30 उत्तरदाता इस मत से अनभिज्ञ थे। काई वर्ग परीक्षण हेतु शून्य परिकल्पना यह है कि रोजगार के अवसरों का क्षेत्र से सम्बन्धित नहीं है। 4 स्वातन्त्रत अंश हेतु 5 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर काई वर्ग का सारणी मूल्य इसके आंकलित मूल्य से अधिक है अतः हमारी शून्य परिकल्पना सत्य है एवं यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि रोजगार अवसरों का क्षेत्र से कोई संबंध नहीं है।

कड़ाना परियोजना ने स्थानीय प्रवास को बढ़ावा दिया है।

यहां यह परिकल्पित किया गया है कि कड़ाना परियोजना से राजस्थान के आदिवासी क्षेत्रों से प्रवास की प्रवृति नहीं है। 153 उत्तरदाता इस कथन से सहमत थे वही 27 उत्तरदाता इससे असहमत थे।

सारणी 3 : कड़ाना परियोजना ने प्रवास को बढ़ावा दिया

लिंग	सहमत	असहमत	कुल योग	काई वर्ग	d.f.
पुरुष	78 (86.7%)	12 (13.3%)	90 (100%)	0.131	1
महिला	75 (83.33%)	15 (16.7%)	90 (100%)		
योग	**153 (85%)**	**27 (15%)**	**180 (100%)**		

(स्रोत - क्षेत्रीय सर्वेक्षण)

काई वर्ग परीक्षण से पता चलता है कि 1 स्वातन्त्रय अंश पर काई वर्ग का सारणी मान 3.84 है जबकि काई वर्ग का परिगणित मूल्य .431 है जो सारणी मूल्य से कम है अतः हमारी शून्य परिकल्पना सत्य सिद्ध होती है व यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि कड़ाना परियोजना ने प्रवास को बढ़ावा दिया है क्योंकि कृषि की सम्भावनाएं कम हो गई है।

कडाना बांध परियोजना से पर्यटकों को आकर्षित करने में सफलता नहीं मिली है।

यहाँ यह परिकल्पित किया गया है कि कड़ाना बांध परियोजना से पर्यटकों को आकर्षित करने में सफलता नहीं मिली है। 153 उत्तरदाता इस कथन से सहमत थे वहीं 27 उत्तरदाता असहमत थे। काई वर्ग परीक्षण से पता चलता है कि 1 स्वातन्त्रय अंश पर 5 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर काई वर्ग का सारणी मूल्य 3.84 है जबकि हमारा परिगणित मूल्य 0.131 है जो सारणी मूल्य से बहुत कम है अतः निष्कर्ष प्राप्त होता है कि आकर्षित करने में सफलता नहीं मिली है।

सारणी 4 : कड़ाना परियोजना का पर्यटन पर प्रभाव

लिंग	सहमत	असहमत	कुल योग	काई वर्ग	d.f.
पुरुष	78 (86.7%)	12 (13.3%)	90 (100%)	0.131	1
महिला	75 (83.33%)	15 (16.7%)	90 (100%)		
योग	**153 (85%)**	**27 (15%)**	**180 (100%)**		

(स्रोत - क्षेत्रीय सर्वेक्षण)

कड़ाना परियोजना से आधारभूत सुविधाओं का प्रसार हुआ है।

यहाँ यह परिकल्पित किया गया है कि कड़ाना परियोजना से अध्ययन क्षेत्र में आधारभूत संरचना का विकास हुआ है। 9०0 उत्तरदाता इस कथन से सहमत थे वही 90 उत्तरदाता इस कथन से असहमत थे। काई वर्ग परीक्षण से पता चलता है कि 5 प्रतिशत सार्थकता स्तर एवं 4 स्वातन्त्रय अंश काई वर्ग का सारणी मूल्य 3.84 है जबकि परिगणित मूल्य 0601 है अतः हमारी शून्य परिकल्पना सत्य है एवं यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि कड़ाना परियोजना से अध्ययन क्षेत्र में आधारभूत सुविधाएं बढ़ी है।

सारणी 5 : कड़ाना परियोजना से आधारित संरचना का विकास हुआ है।

लिंग	सहमत	असहमत	कुल योग	काई वर्ग	d.f.
पुरुष	48 (53.3%)	57 (80%)	105 (100%)	0.601	1
महिला	42 (46.7%)	33 (20%)	75 (100%)		
योग	**90 (50%)**	**90 (50%)**	**180 (100%)**		

(स्रोत - क्षेत्रीय सर्वेक्षण)

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Ansari, M.H. (1991), Education and Economic Development, *Economic and Political Weekly*, Vol. 27, No. 51/52, pp. 171-177.
2. Asopa, V.N. and Tripathi, B.L. (1978), Command Area Development in Mahi Kadana, *Indian Institute of Management, Ahmedabad*.
3. Bassi, Nitin (2013), Irrigation Management Transfer in India : The Processes and Constraints, *Online Publication*.
4. Bhobor, Bahadur Singh (2002), "बाँसवाड़ा जिले में जल संसाधनों की उपयोगिता" *Unpublished Ph.D. Thesis*, Mohanlal Sukhadia University, Udaipur.
5. Bhobor, Bahadur Singh (2002), "बाँसवाड़ा जिले में जल संसाधनों की उपयोगिता" *Unpublished Ph.D. Thesis*, Mohanlal Sukhadia University, Udaipur.
6. Das, Deepak Kumar (2005), Community Based Socio-Economic Development Planning in Irrigation in India, *Online Publication*, *Japan Bank for International Cooperation*.
7. Dungarpur District Groundwater Brochure, Govt. of India, Ministry of Water Resources, *Central Ground Water Board, Western Region, Jaipur*.
8. Ganguli, B.N. (1998), Trends of Agriculture and Population in Gangas Valley, A Study in *Agricultural Economics, London*.
9. Ghosh, B.N. (1977), Economic Development and Planning, *National Publishing House*, *New Delhi*, pp. 3-4.
10. Gorishanker, Heera Chand Ojha, Banswara Rajya Ka Itihas, *Vadik Ganthlaya, Ajmer*.
11. Gorishanker, Heera Chand Ojha, Dungarpur Rajya Ka Itihas, *Vadik Ganthlaya, Ajmer*.
12. Grigg, D.B. (1975), Population Pressure and Agriculture Chand, *Progress in Geography*, Vol. 8.
13. Gupta A. K. (1963): "Inter-state differences in cropping pattern and productivity", Indian *Journal of Agricultural Economic*, Vol: 18 Issue: 1, Pp. 27-56.
14. Karunakaran, K.R. and Palanisani K. (1998), An analysis of impact of irrigation on cropping intensity in Tamilnadu, *Indian Economic Review*, Vol. XXIX, pp. 34-39.
15. Keshan, J. (1990) 'The Effect of Irrigation and Large Dams, *Times of India, New Delhi*.
16. Khatri, L.C. (1988): Agricultural Typology of the Tribal Region of Southern Rajasthan, *Unpublished Ph.D. Thesis*, M.L. Sukhadia University, Udaipur

RRIJM 2015, All Rights Reserved

17. Khatri, L.C. (1995), Changes in Agricultural, Use and Cropping Pattern of Som-Kamla Amba Project Command Area, *Regional S.C. Development Department, Udaipur*
18. Kothari, Sadhana (1985) Agriculture Land Use and Population, *Ph.D. Thesis*, M.L. Sukhadia University, Udaipur
19. Kumar, Anil K. (2000), Dams and Displacement: A Review, *Centre for Economic and Social Studies*, *Begumpet, Hyderabad* (*Online*).
20. N.C.R., New Delhi (1978), An Investigation in to the Special Economic Condition of Command Area (Maherashtra), *Department of Agricultural Economic*.
21. Salvi, Laxman Lal (2004), "डूंगरपुर शहर में जल संसाधनों की उपयोगिता" *Unpublished Ph.D. Thesis*, Mohanlal Sukhadia University, Udaipur.
22. Shets, S.T. (2009), Levels of Social - Economic Development in Solapur District (M.S.): *A Geographical Analysis*.
23. Solanki, A.S. Equity issues and their socio-economic impact in a tribal dominated irrigation project in India, *Online Publication*

RRIJM 2015, All Rights Reserved